International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 3, March 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com Double-
Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at:
Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

विद्यालयीन शिक्षा के विकास में नवोदय एवं केन्द्रीय विद्यालयों का योगदानः छत्तीसगढ़ राज्य के संदर्भ में विश्लेषणात्मक अध्ययन

राजलक्ष्मी पाण्डेय
शोधार्थी, पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग
डॉ. सी. व्ही रमन विश्वविद्यालय
बिलासपुर छत्तसीगढ़

विनोद कुमार अहिरवार
ग्रंथपाल, शासकीय विश्वनाथ यादव
तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी
महाविद्यालय दुर्ग छत्तीसगढ़

डॉ संगीता सिंह
विभागाध्यक्ष,
डॉ सी. व्ही. रमन विश्वविद्यालय
कोटा , बिलासपुर

सारांश

भारत में विद्यालयीन शिक्षा का गौरवशाली इतिहास रहा है। भारत में प्राचीन काल में गुरूकुल पद्वति के आधार पर विद्यालयीन शिक्षा दी जाती थी। कालांतर में भारत पर विदेशी शासकों के शासन का प्रभाव हमारी शिक्षा पद्वति, विशेष रूप से विद्यालयीन शिक्षा पर पड़ा। अंग्रेजों का भारत पर बहुत लंबे समय शासन होने के कारण अंग्रेजी शिक्षा, विशेष रूप से मैकालेकी शिक्षा पद्वति का बहुत अधिक प्रभाव आज भी है।

मुगलों के शासनकाल में उनकी धार्मिक उद्देश्यों की पूर्ति हेतु शिक्षा को संचालित किया गया। अंग्रेजो के शासनकाल में विशेष रूप सेलिपकीय शिक्षा को प्रदान करने हेतु विद्यालयीन शिक्षा को संचालित किया गया।

स्वतंत्र भारत में शिक्षा का बहुत अधिक विकास हुआ। विशेष रूप से विद्यालयीन शिक्षा हेतु अनेक प्रयास किये गये। विद्यालयीन शिक्षा को उत्कृष्ट बनाने के लिये विभिन्न आयोगो एवं समितियो का गठन किया गया। अनेक परियोजनाओं के माध्यम से भी विद्यालयीन शिक्षा को उत्कृष्ट बनाने का प्रयास किया जा रहा है।

आधुनिक भारत में विद्यालयीन शिक्षा को उत्कृष्ट बनाने की दृष्टि से केन्द्रीय विद्यालयों एवं जवाहर नवोदय विद्यालयों का उदय हुआ। दोंनो ही प्रकार के विद्यालय केन्द्र शासन के माध्यम से संचालित किये जाते है। प्रस्तुत शोध लेख में केन्द्रीय एवं नवोदय विद्यालयों के माध्यम से छत्तीसगढ़ की शैक्षणिक उत्कृष्टता को प्रभावी बनाने में योगदान का अध्ययन किया गया है। बहुत हद तक छत्तीसगढ़ की शैक्षणिक उत्कृष्टता को इन दोनो ही प्रकार विद्यालयों के माध्यम से प्रभावी बनाया जा रहा है।

प्रस्तावना

छत्तीसगढ़ राज्य मध्यप्रदेश से पृथकहुआ तेजी से विकास करने वाले राज्यो में से एक नवोदित राज्य है। किसी भी राज्य के सामाजिक एवं आर्थिक विकास का आधार शिक्षा होती है, और शिक्षा की उत्कृष्टता से समाज का सामाजिक एवं आर्थिक विकास संभव हो पाता है। इस सामाजिक विकास हेतु अनिवार्य रूप से विद्यालयों का योगदान होता है। भारत में शिक्षा के क्षेत्र में केन्द्र सरकार के विद्यालयों का विशेष योगदान रहा है। केन्द्र शासन के दो प्रकार के विद्यालय– केन्द्रीय विद्यालय एवं नवोदय विद्यालय पूरे देश में विद्यालयीन शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेख्यनीय कार्य कर रहे है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 3, March 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com Double-
Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at:
Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

अविभाजित मध्यप्रदेश के छत्तीसगढ़ी भाषा वाले क्षेत्रों में राजनैतिक एवं भौगोलिक परिस्थितिओं के कारण पृथक राज्य की आवश्यकता बहुत लंबे समय से महसूस की जाती रही है। इस दिशा में अनेक आंदोलन एवं प्रयास होते रहे हैं। इन प्रयासों के फलस्वरूप 1 नवंबर 2000 में पृथकछत्तीसगढ़ राज्य की स्थापना हुई, परन्तु पृथक राज्य बनने के बाद भी केन्द्र सरकार के अनेक विभागों के क्षेत्रीय कार्यालय मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल एवं अन्य शहरों में स्थापित है। इसी कड़ीमें केन्द्रीय विद्यालयों एवं नवोदय विद्यालयों के प्रशासनिक व्यवस्था हेतु क्षेत्रीय कार्यालय भोपाल एवं जबलपुर एवं रायपुर शहरों में है। इन विद्यालयों के साथ अन्य विद्यालयों की संबद्वता केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मण्डल के क्षेत्रीय कार्यालय अजमेर के माध्यम से होता है। इसको पश्चिमी क्षेत्र या जोन भी कहा जाता है।

छत्तीसगढ राज्य मध्यप्रदेश से पृथक होने के बाद अन्य क्षेत्रों में प्रगति के साथ–साथ विद्यालयीन शिक्षा में भी प्रगति कर रहा है। राज्य शासन द्वारा संचलित शासकीय विद्यालयों में अध्ययन के स्तर में भी लगातार सुधार हो रहा है। विद्यालय हेतु भवनो का निर्माण भी लगातार हो रहा हैं। विद्यालयीन शिक्षा हेतु बजट में लगातार बढ़ोत्तरी हो रही है। बजट की उपलब्धता के कारण छत्तीसगढ़ शासन द्वारा कक्षा 1 से कक्षा 10 तक के विद्यार्थियों को पाठ्य पुस्तके निशुल्क वितरित की जाती है। इस योजना का मुख्य उद्देश्य अधिक से अधिक विद्यार्थियों को शाला जाने हेतु प्रोत्साहित करना है। राज्य में मुख्यमंत्री प्रोत्साहन योजना के अन्तर्गत प्रावीणता सूची में स्थान प्राप्त विद्यार्थियों को विशेष छात्रवृत्ति की भी व्यवस्था की गयी है। इन योजना का लाभ भी प्रदेश में निरंतर प्रकाश में आ रहा है। राज्य की विद्यालयीन शिक्षा की शैक्षणिक उत्कृष्टता निरंतर प्रभावी हो रही है।

विद्यालयीन शिक्षा में विकास हेतु राज्य में अनुसंधान एवं प्रशिक्षण हेतु राज्य शैक्षणिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद का निर्माण किया गया ।

अध्ययन के उद्देश्य

इस अध्ययन के मुख्य उद्देश्य इस प्रकार हैं :

1. भारत में विभिन्न युगों के अनुसार विद्यालयीन शिक्षा के विकास का ऐतिहासिकअध्ययन।
2. भारत में विभिन्न स्तर की शिक्षा के साथ विद्यालयीन शिक्षा की संरचना का ऐतिहासिक अध्ययन।
3. शैक्षणिक उत्कृष्टता को प्रभावी बनाने में केन्द्रीय विद्यालयों और नवोदय विद्यालयों में संसाधनों के विकास का ऐतिहासिक अध्ययन।
4. केन्द्रीय विद्यालयों एवं नवोदय विद्यालयों में उपलब्ध में उपलब्ध सूचना स्रोतों एवं सूचना सेवाओ की उपयोगिता का अध्ययन।
5. इन सूचना स्रोतों के माध्यम से शैक्षणिक उत्कृष्टता की प्रभावशीलता का अध्ययन।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 3, March 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com Double-
Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at:
Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध लेख से संबंधित अध्ययन को पूरा करने के लिये सामाजिक अनुसंधान पद्वति का उपयोग किया गया हैं साहित्य सर्वेक्षण के माध्यम से केन्द्रीय विद्यालयों एवं नवोदय विद्यालयों की शैक्षणिक उत्कृष्टता पर प्रभावशीलता को जानने हेतु शिक्षा संलग्न विभिन्न संगठनोंकी बेवसाईट एवं शोध लेखों एवं पूर्व शोध लेख के विषय से संबंधित पूर्व में किये गये शोध प्रबंधों इत्यादि का अध्ययन किया गया है।

भारत में शिक्षा के विकास का इतिहास

भारत में शिक्षा का काफी प्राचीन इतिहास रहा है। प्राचीन काल में गुरूकुलों की व्यवस्था थी एवं इन्ही के माध्यम से प्रारंभिक एवं विद्यालयीन शिक्षा का संचालन किया जाता था। ऋषि–मुनि उस समय शिक्षण का कार्य किया करते थे। नैतिक, धार्मिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा पर प्राचीन समय में विशेष ध्यान दिया जाता था। उस समय सूचना के स्रोत मुख्य रूप से धार्मिक ग्रंथ ही हुआ करते थे। ऋषि–मुनियों द्वारा कुछ विषयों से संबंधित संहिताओं, मिमांसाओं, वेदो एवं पुराणों की रचना की गयी। यह सभी ग्रंथ इतने अधिक प्रभावी थे कि इनका महत्व वर्तमान मे भी कम नहीं हुआ है।

भारत में मुगलो का शासन लंबे समय तक रहा हैं। बिट्रिस शासन के पूर्व मुगलों का शासन भारत वर्ष पर था। हमारी शिक्षा पर भी मुगलकालीन शिक्षा का भी प्रभाव रहा है। इसकी झलक भारत के कुछ हिस्सों मे आज भी दिखती है। विद्यालयीन शिक्षा को भले ही मुगलकालीन शैली से प्रभावित किया गया हो, परन्तु भारत की मूल परंपराओं एवं सांस्कृति का ध्यान भी इस युग में रखा गया। इस काल में बहुत से संस्कृत के ग्रंथों का अनुवाद परसियन में किया गया। अनेक शिक्षण संस्थानों, विद्यालयों एवं विशिष्ट मदरसों का निर्माण किया गया।

ब्रिटिश कालीन भारत में आधुनिक शिक्षा का आरंभ हुआ। शिक्षा का मूलभूत ढॉचा इस काल में निर्मित हुआ। मैकाले की शिक्षा नीति का अनुसरण आज भी भारत में हो रहा है। ब्रिटिश काल अनेक विद्यालयों का निर्माण हुआ इनमें से कुछ विशिष्ट आवासीय विद्यालय आज भी प्रसिद्व हैं। इस काल में भारत में उच्च शिक्षा के स्थान पर मात्र प्रारंभिक एवं काम चलाने के योग्य शिक्षा पर ही विशेष ध्यान दिया गया। उच्च शिक्षा के लिये प्रायः लंदन या अन्य पश्चिमी शहरों में जाना पड़ता था।

भारत में आधुनिक शिक्षा का आरंभ स्वतंत्रता के बाद से ही प्रारंभ हुआ।तीव्रता से नवीन विद्यालयों को प्रारंभ किया गया। मूलभूत शिक्षा के साथ उच्च शिक्षा एवं तकनीकि शिक्षा पर भी ध्यान दिया गया । भारत में मात्र भारत के निवासियों के लिये ही शिक्षा नहीं दी जा रही विदेशी विद्यार्थी को भी भारत में अध्ययन के अवसर उपलब्ध कराये जा रहे है। केन्द्रीय विद्यालय भी भारत के अलावा कुछ अन्य एशियाई देशों में भी स्थापित किये गये है। उच्च शिक्षा की दिशा में भारत का इंदिरा गांधी मुक्त विश्वविद्यालय विदेशों में भी अपनी सेवाये प्रदान कर रहा है। कृषि शिक्षा एवं उच्च शिक्षा के क्षेत्र में भी भारत अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सूचना सेवाओं में विश्व का प्रतिनिधित्व कर रहा है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 3, March 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com Double-
Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at:
Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

भारत में सन 1963 से केन्द्रीय विद्यालयोंएवं सन 1987 से नवोदय विद्यालयों का शुभांरभ होना भारत की विद्यालयीन शिक्षा हेतु एक महत्वपूर्ण कदम है। इन विद्यालयों के खुलने से निश्चित रूप से उच्चतर माध्यमिक शिक्षा की गुणवत्ता में उत्कृष्टता लाने की दिशा में श्रेष्ठतम प्रयास है। दोनोही विद्यालय पूरे भारत में अपनी श्रेष्ठता को प्रमाणित भी कर रहे है। भारत में विद्यालयीन शिक्षा के इतिहास में कुछ महत्वपूर्ण प्रयास निम्नानुसार है:

1. प्राचीन काल में गुरूकुलों के माध्यम से औपचारिक शिक्षा की व्यववस्था थी, इस समय गुरूकुल में विद्यार्थियों को स्वयं का कार्य अनुशासित रहकर करना पड़ता था। लगभग सभी प्रकार की सुविधाओं का अभाव था। सुख सुविधाओं का विद्यार्थियों को त्याग करके स्वअनुशासित रहकर अध्ययन करना पड़ता था। विद्यार्थियों को इस समय वेदो, पुराणों, उपनिषदो एवं अन्य धार्मिक महत्व के ग्रंथो का अध्ययन करना होता था। इस समय विद्यार्थियों को ब्रह्मचर्य में रहने और गुरु दक्षिणा देने का प्रावधान भी निर्धारित था।
2. मध्यकाल में भारत में नालंदा एवं तक्षशिला विश्वविद्यालयों जैसे उच्च शिक्षा के केन्द्रों का निर्माण हुआ। उस समय दर्शन, आध्यात्म, चिकित्सा, योगा, ज्योतिष शास्त्र, खगोल विज्ञान, साहित्य, वैज्ञानिक दर्शन, संस्कृत साहित्य के अन्तर्गत हिन्दू, जैन एवं बौद्ध धर्म ग्रंथों इत्यादि का अध्ययन–अध्यापन कार्य होता था। इस समय भी विद्यार्थियों के लिये सुख–सुविधाओं से दूर रहकर एवं स्वानुशासित रहकर अध्ययन पर ध्यान देना होता था। इस समय अध्ययनरत विद्यार्थियों की संख्या लगभग 10,000 से भी अधिक थी।
3. 11वी शताब्दी में मुगलों के शासन काल के अन्तर्गत शिक्षा में विकास कुछ आगे बढ़ा और प्राथमिक तथा उच्चतर माध्यमिक अध्ययन की व्यवस्था प्रारंभ हुई।
4. मुगलकाल में भारतीय एवं मुगल परंपराओं का आपस में मेल–मिलाप हुआ। आज भी भारतीय शिक्षा एवं संस्कृति में इसका कुछ प्रभाव दिखता है।
5. मुगलकाल में मुख्य रूप से अध्यात्म विज्ञान, दर्शन, धर्मशास्त्र, ललित कला, पेन्टिंग, स्थापत्य, गणित, चिकित्सा, खगोल विज्ञान इत्यादि विषय क्षेत्रों का अध्ययन–अध्यापन कार्य प्रारंभ हुआ।
6. मुगलकाल में दिल्ली विश्वविद्यालय, लखनऊविश्वविद्यालय एवं इलाहाबाद विश्वविद्यालय प्रारंभ हुये। इस समय विद्यालयों को मदरसा नाम से संबोधित किया जाता था।
7. आधुनिक भारत में शिक्षा में अमूलचूल परिवर्तन हुये इस काल को हम दो भागों में विभाजित कर सकते है– स्वतंत्रता पूर्व की शिक्षा एवं स्वतंत्र भारत में शिक्षा।
8. 1784 ईसवी. में एशियाटिक सोसाईटी आफ बंगाल की स्थापना सर विलियम जोन्स ने की। इस सोसाईटी के निर्माण के अनेक अंग्रेजी माध्यम के विद्यालय एवं महाविद्यालयों को प्रारंभ किया गया।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 3, March 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com Double-
Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at:
Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

9. 1854 ईसवी में चार्ल्स वुड की विज्ञप्ति के अनुसार प्रत्येक राज्य में एक शिक्षा विभाग एवं इसके माध्यम से वहॉविश्वविद्यालय, महाविद्यालय एवं विद्यालयों को खोजने हेतु प्रयास किये गये।
10. स्वत्रंता के बाद शिक्षा की जिम्मेदारी मात्र राज्यों की ही होती थी, केन्द्र शासन केवल इस हेतु राज्यों को मात्र प्रोत्साहित करने का कार्य ही करता था। परन्तु कालंतर में बदलाव होते–होते सन 1976 में शिक्षा राज्य और केन्द्र दोनो की सम्मिलित जिम्मेदारी हो गयी।
11. भारतीय संविधान में शिक्षा को मूल अधिकारों के रूप रखने का प्रावधान दिया गया।
12. भारत में 1987 में नई शिक्षा नीति को लागू किया गया। इस शिक्षा नीति में भारत के प्रत्येक जिलों में नवोदय विद्यालय प्रारंभ करने की घोषणा की गयी।

    1987 के बाद सन 2020 में शिक्षा नीति में अमूलचूल परिवर्तन कर नई शिक्षा नीति लागू की गयी इस शिक्षा में 5+3+3+4 के सूत्र को अपनाया गया। वर्तमान नई शिक्षा भारत के प्राचीन संबृद्ध एवं वैभवशाली ज्ञान एवं वर्तमान आधुनिक ज्ञान से विद्यार्थियों को परिचित कराने की दृष्टि से एक उत्कृष्ट प्रयास है।

    भारत में प्रत्येक युग में शिक्षा का स्तर उत्कृष्ट होने के कारण शिक्षा हमारे आर्थिक विकास का आधार बनी हुई है, इससे देश में आर्थिक एवं समाजोपयोगी अनुसंधान एवं वैज्ञानिक अविष्कार हो रहे हैं। इस प्रकार भारत की शिक्षा पद्वति भारत के विकास एवं उन्नति का आधार है। इस शिक्षा पद्वति से देश में अनुसंधान एवं विकास के साथ–साथ अन्य देशों को भी विकास एवं उन्नति में योगदान दिया जा रहा है।

भारत में केन्द्रीय विद्यालयों का इतिहास

भारत में विद्यालयीन शिक्षा का विकास अनेक चरणों में हुआ है। उनमें से केन्द्रीय विद्यालयों का निर्माण भी एक महत्वपूर्ण योगदान है। स्वतंत्र भारत में सन 1963 में इन विद्यालयों का शुभांरभ हुआ उस समय इन विद्यालयों को सेंट्रल स्कूल के नाम से जाना जाता था बाद इनका नाम केन्द्रीय विद्यालय के रूप में परिवर्तित हुआ। सभी केन्द्रीय विद्यालय केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मंडल से संबद्व थे, और इन विद्यालयों को मात्र भारतीय रक्षा सेवा के कर्मचारियों एवं अधिकारियों के बच्चों को अध्ययन की सुविधा देन की दृष्टि से प्रारंभ किया गया। सेना के माध्यम से स्वयं के आर्मी पब्लिक स्कूल संचलित होने के बाद से इन विद्यालयों को अन्य केन्द्रीय कर्मचारियों एवं अधिकारियों के बच्चों हेतु संचालित किया जाने लगा। वर्तमान में यह विद्यालय केन्द्रीय कर्मचारियों के बच्चों के साथ–साथ समाज के अन्य वर्गो के लिये भी प्रवेश हेतु उपलब्ध हो गये है। इन विद्यालयों में प्रवेश परीक्षा के माध्यम से प्रवेश दिया जाता है। इन विद्यालयों के इतिहास को संक्षिप्त में निम्न प्रकार प्रदर्शित किया जा सकता है:

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 3, March 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com Double-
Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at:
Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

1. भारत सरकार के दूसरे वेतन आयोग की अनुसंशाओं के आधार पर केन्द्रीय विद्यालयों की
   योजना का अनुमोदन 1962 में किया गया। वेतन आयोग द्वारा यह अनुशंसा की गयी कि सरकार को ऐसे विद्यालयों की स्थापना करनी चाहिये कि केन्द्रीय शासन के स्थानांतरित कर्मचारियों के बच्चों के अध्ययन में कोई व्यवधान उत्पन्न न हो। परिणाम स्वरूप भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय जो अब मानव संसाधन विकास मंत्रालय के नाम से जाना जाता हैं के अन्तर्गत एक इकाई के रूप में सेन्ट्रल स्कूल आर्गेनाईजेशन की शुरूआत की गयी।
2. केन्द्रीय विद्यालयों की स्थापना 1963 में हुई, उस समय इनको सेन्ट्रल स्कूल के नाम से जाना जाता था।
3. बाद में सन 1965 में इनका नाम केन्द्रीय विद्यालय पड़ा और वर्तमान में भी केन्द्रीय विद्यालय के नाम से ही जाना जाता है।
4. प्रारंभ मे इन विद्यालयों को भारतीय रक्षा सेवा के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के बच्चों को प्रवेश हेतु खोला गया था, परन्तु रक्षा सेवा के अधिकारियों और कर्मचारियों के बच्चों हेतु स्वयं के आर्मी सार्वजनकि विद्यालय प्रारंभ होने के कारण यह विद्यालय अन्य केन्द्रीय कर्मचारियों के बच्चों के लिये भी प्रारंभ किया गया।
5. संचालित सभी केन्द्रीय विद्यालय केन्द्र शासन के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अन्तर्गत संचालित किये जाते है। इन विद्यालयों को केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा के पाठ्यक्रम से संबद्व किया गया है।
6. वर्तमान में केन्द्रीय विद्यालय संगठन भारत में विद्यालयों की सबसे बढ़ी श्रृंखला है। इस श्रंखला में भारत के अलावा कुछ अन्य एशियाई देशों में भी केन्द्रीय विद्यालयों के माध्यम से शिक्षा में योगदान दिया जा रहा है।
7. 1969 में 20 विद्यालयों से प्रारंभ हुआ केन्द्रीय विद्यालय संगठन अब वर्तमान में 1199 विद्यालयों वाला बड़ा नेटवर्क है। 1199 केन्द्रीय विद्यालय भारतमें एवं 03 केन्द्रीय विद्यालय विदेश अर्थात काडमाडू, तेहरान एवं मास्को में है। प्रतिवर्ष इन विद्यालयों की संख्या में बढ़ोत्तरी हो रही है।
8. कुल 112 विद्यार्थियों से प्रारंभ हुये इन विद्यालयों में सत्र 2018–19 के अन्तर्गत 12,75,795 विद्यार्थी अध्ययन कर रहे हैं।

शैक्षणिक उत्कृष्टता प्रभावी बनाने की दिशा में यह विद्यालय निरंतर नवीनतम प्रयोग करते रहते है, और उत्कृष्टता को प्रभावी भी बनाते है। इन विद्यालयों की श्रेष्ठता इनके परीक्षा परिणामों के माध्यम से प्रकाशित होती है। अनेक बार सीबीएसई के परीक्षा परिणामों ये विद्यालय प्रथम स्थान पर रहते है। प्रथम स्थान पर बने रहने के लिये केन्द्रीय विद्यालय संगठन एवं इन विद्यालयों के द्वारा अनेक प्रयास किये जाते रहे है। इन प्रयासों में मुख्य प्रयास इस प्रकार है:

1. विद्यालयों में हमारी संस्कृति के सरक्षण एवं विद्यार्थियों इसके प्रति अभिरूचि जागरित करने के उद्देश्य से कक्षा छठवी से कक्षा आठवी तक संस्कृत के अध्ययन हेतु अनिवार्य विषय रूप के रूप में सम्मिलित किया गया है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 3, March 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com Double-
Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at:
Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

2. विदेशी भाषाओं के अध्ययन की व्यवस्था भी केन्द्रीय विद्यालय संगठन के द्वारा की गयी है।
3. अध्ययन हेतु किसी प्रकार की बाधा न आये इसलिये कक्षा 8 तक की शिक्षा को निःशुल्क रखा गया है।
4. प्रत्येक विद्यार्थियों को महापुरूषों के जीवन से शिक्षा लेने एवं उनके आदर्शो को अपनाने हेतु प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से विद्यार्थियों को चार हाउस में विभाजित किया जाता है– शिवाजी, रमन , अशोक एवं टैगोर। विद्यालयों का आदर्श वाक्य ''ज्ञानार्थ प्रवेश सेवाव्रता'' प्रस्थान है, अर्थात ज्ञान के लिये प्रवेश एवं सेवा के लिये प्रस्थान।
5. सूचना संचार तकनीकी एवं कम्प्यूटर तकनीकि के माध्य से शिक्षा की उत्कृष्टता को प्रभावी बनाने की दृष्टि से निरंतर छात्र एवं कम्प्यूटर का अनुपात में बढ़ोत्तरी हो रही है। सन 2013 में छात्र एवं कम्प्यूटर का अनुपात 22:1 था परन्तु 2019 में यह अनुपात 17:1 हो गया है। निरंतर प्रतिवर्ष कम्प्यूटर और सूचना संचार तकनीकि हेतु बजट में बढ़ोत्तर की जा रही है। इससे विद्यार्थियों की शैक्षणिक उत्कृष्ट को प्रभावी बनाने में सहायता मिल रही है।
6. प्रतिवर्ष निरंतर विद्यार्थियों एवं शिक्षक के अनुपात में भी बढ़ोत्तरी हो रही है। 2013 में विद्यार्थी/ शिक्षक का अनुपात 31:1 था, परन्तु 2019 में यह अनुपात 26:1 हो गया है। इस प्रकार प्रति विद्यार्थी शिक्षक के अनुपात में भी बढ़ोत्तरी हो रही है। इसका लाभ विद्यार्थियों की शैक्षणिक उत्कृष्टता को प्रभावी बनाने में सहायता मिलती है।

वर्तमान में विद्यालयीन शिक्षा को उत्कृष्ट बनाने में केन्द्रीय विद्यालयों संगठन एवं इसके विद्यालय अपना बहूमूल्य योगदान दे रहें हैं। इसके लिये केन्द्रीय विद्यालय संगठन पर्याप्त बजट एवं अन्य संसाधन विद्यालयों को उपलब्ध कराता है। इसके परिणाम स्वरूप केन्द्रीय विद्यालय प्रायः केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मण्डल की परीक्षाओं में सर्वश्रेष्ठ स्थान पर रहते हैं।

भारत में नवोदय विद्यालयों का इतिहास

भारत मे शिक्षा के क्षेत्र में सन्1986 में एक महत्वपूर्ण एवं उल्लेख्यनीय विकास हुआ– जवाहर नवोदय विद्यालयों का उदय। भारत में शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के समान विद्यालय स्तर पर उत्कृष्ट गुणवत्ता युक्त शिक्षा देने के उद्देश्य से तत्कालीन प्रधान मंत्री राजीव गांधी ने मुख्य रूप से ग्रामीण प्रतिभाशाली विद्यार्थियों हेतु 1986 में जवाहर नवोदय विद्यालय स्थापित किया साथ ही साथ इन विद्यालयों के संचालन के लिये नवोदय विद्यालय समिति भी नई दिल्ली में गठित की गयी प्रदेश स्तर पर नवोदय विद्यालयों के संचालन तथा मार्गदर्शन हेतु समिति के क्षेत्रीय कार्यालय भी स्थापित किये। चूकि इन विद्यालयों कीस्थापना के पीछे शैक्षणिक उत्कृष्टता को श्रेष्ठतम बनाना ही उद्देश्य रहा है, अतः इन विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों को अध्ययन, शैक्षणेत्तर गतिविधियों एवं विद्यालय की अन्य सभी गतिविधियों को पूरा करने हेतु सुसज्जित पुस्तकालयों के द्वारा

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 3, March 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com Double-
Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at:
Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

उचित पाठ्य सामग्री तथा सूचनायें उपलब्ध कराना अनिवार्य है। इस दिशा में विद्यालय के पुस्तकालय, पुस्तकालयाध्यक्ष एवं पुस्तकालय के अन्य कर्मचारी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाहन कर रहें है। नवोदय विद्यलायों में पुस्तकालय के उपयोग हेतु कक्षावार कालखण्ड निर्धारित किये गये जिससे विद्यार्थी पुस्तकालय के संसाधनों अनिवार्य रूप से उपयोग कर सके। पुस्तकालय कालखण्ड के अलावा भी विद्यार्थी पुस्तकालय का लाभ अन्य समय में भी ले सकते है, क्योंकि यह पूर्णतः आवासीय विद्यालय होते है। पुस्तकालयों में परंपरागत मुद्रित पाठ्य सामग्री के साथ ई–सूचना स्रोत तथा मल्टीमीडिया सूचना स्रोत भी उपलब्ध करा रहे हैं।

नवोदय विद्यालय समिति और इसके विद्यालयों के माध्यम से विद्यालयीन स्तर पर शैक्षणिक उत्कृष्टता को प्रभावी बनाने हेतु निरंतर अनेक प्रयास किये जात है। इन प्रयासों में कुछ प्रयास इस प्रकार है:

1. नवोदय विद्यालयों को सातवीं पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत महाराष्ट्र के अमरावती एवं हरियाणा के झज्जर में सन 1986 में प्रयोग के तौर पर खोला गया।
2. 1992 में जर्नादन रेड्डी समिति ने अनुसंसा की, कि भारत के प्रत्येक जिले में एक नवोदय विद्यालय खोला जाना चाहिये।
3. 1986 में 02 विद्यालयों से प्रारंभ हुये थे। सन 2015 तक इनकी संख्या 598 तक पहुच गयी है।
4. कक्षा 6 से कक्षा 12 तक की शिक्षा को पूर्णतः निशुल्क प्रदान किया जाता है। प्राचीन गुरूकुल पद्वति एवं आधुनिक दून विद्यालय की तर्ज पर इन विद्यालयों को पूर्णतः आवासीय बनाया गया है। इससे विद्यार्थियों का सम्पूर्ण विकास संभव हो पाता है।
5. शैक्षणिक उत्कृष्टता हेतु सन 1986–87 से नवोदय विद्यालयों को संचालित किया जा रहा है। नवोदय विद्यालय केन्द्र सरकार एवं राज्य दोनो के सहयोग से निर्मित होते है। राज्य शासन को इस हेतु 30 एकड़ भूमि निशुल्क उपलब्ध करानी होती है, एवं जब तक स्थायी विद्यालय भवन एवं आवास निर्मित न हो जाये जब तक अस्थायी भवन उपलब्ध कराना होता है।
6. पूर्णतः निर्मित विद्यालयों में शयन कक्ष, कर्मचारी आवास, भोजन कक्ष, खेल मैदान, प्रयोगशालाये, पुस्तकालय इत्यादि से सुज्जित होता है। भारत में वर्तमान में जवाहर नवोदय विद्यालयों की संख्या 661 है। ग्रामीण क्षेत्रों के अलावा अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति बाहुल्य क्षेत्रों में भी नये जवाहर नवोदय विद्यालय प्रस्तावित है। वर्तमान में छत्तीसगढ़ में 28 एवं मध्यप्रदेश में 54 जवाहर नवोदय विद्यालय संचालित हो रहे है।
7. पूर्व में इन विद्यालयों में प्रवेश कक्षा 6 से ही होता था परन्तु वर्तमान में कक्षा 6वी, कक्षा 9वीं एवं कक्षा 11वीं से प्रवेश होते है।
8. इन विद्यालयों में प्रारंभ से ही कम्प्यूटर शिक्षा देने का प्रयास किया जाता रहा है। इन विद्यालयों में निरंतर कम्प्यूटर एवं विद्यार्थियों का अनुपात निरंतर 1:12 रहता है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 3, March 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com Double-
Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at:
Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

9. इन विद्यालयों में सत्र 1986–87 के अन्तर्गत 6253 विद्यार्थी थे, 2015–16 में यह संख्या 41663 हो गयी है।
10. नवोदय विद्यालयों के राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने की दृष्टि से अध्ययन के दौरान विद्यार्थियों का अभिगमन या प्रवास किया जाता है। नवोदय विद्यालयों में राष्ट्रीय एकता के लिये त्रयी भाषा के सूत्र को भी अपनाया गया है।

वर्तमान विद्यालयीन शिक्षा के विकास में नवोदय एवं केन्द्रीय विद्यालयों का योगदान

भारत देश में विद्यालयीन शिक्षा की उत्कृष्टता की बहुत अधिक प्रभावी है। विद्यालयीन शिक्षा में बहुत सारी कमियां एवं कठिनाईयां होने के बाद भी भारत में विद्यालयीन शिक्षा श्रेष्ठता की ओर अग्रसर हो रही है। विद्यालयीन शिक्षा को वर्तमान समय के अनुरूप बदलाव की आवश्यकता है, एवं इसको सूचना प्रौद्योगिकी की सहायता से आधुनिक बनाना नितांत आवश्यक है। विद्यालयीन शिक्षा के प्रत्येक क्षेत्र अध्ययन, अध्यापन एवं अनुसंधान में आधुनिकता एवं बदलाव की आवश्यकता है। जवाहर नवोदय विद्यालय एवं केन्द्रीय विद्यालय विद्यालयीन शिक्षा में आधुनिकता एवं बदलाव में महत्वूपर्ण योगदान दे रहे है। इन विद्यालयों के इस योगदान को विभिन्न सारणियों के माध्यम से प्रदर्शित किया जाता है:

उपसंहार

केन्द्रीय विद्यालय एवं जवाहर नवोदय विद्यालय सम्पूर्ण भारतवर्ष में शैक्षणिक उत्कृष्टता को प्रभावी बनाने हेतु लगातार प्रयास कर रहे है। छत्तीसगढ़ एवं मध्यप्रदेश में भी शिक्षा की उत्कृष्टता को प्रभावपूर्ण बनाने की दिशा में ये विद्यालय में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। विद्यालयीन शिक्षा की उत्कृष्टता को बनाये रखने के लिये दोनो ही प्रकार के विद्यालय लगातार प्रयास करते है। इसके सूचना के आधुनिकतम स्वरूप जैसे इलेक्ट्रानिक, डिजीटल एवं आनलाईन सूचना स्रोातों को उपलब्ध कराने पर विशेष ध्यान दे रहे है। निश्चित ही इन विद्यालयों द्वारा समाज की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति को उत्कृष्ट बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका है।

संदर्भ

- Krishna, Kumar. Reference service. 2nded. New Delhi: Vikas. 1943. Print.
- Kumar, Parveen. *Evaluation of Electronic Libraries*. New Delhi: Shriti Book Distributors.
  2015. Print.
- Ranganathan, S R. *The Five Law of Library Science*. Madras: The Madras Library
  Association, 1931. Print.
- Prasher, R G. "Understanding Information" *Information Management with IT Application.* Ed. Sahoo, K C. New Delhi: Medallion Press. 2004. 1-15. Print

- "Information." Wikipedia: the free encyclopedia. Wikimedia Foundation, Inc. 6 June 2018, https://wikipedia.org/wiki/Information, Accessed 6 June 2018.
- Pushpanadham, Karanam. Development of an e Learning Programm for enhancing professionals of Secondary School Principle in the state of Assam. Maharaja Siyajirao University of Baroda. 2015 Web 15 Jun 2018. http://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/64285
- Baskaran R. Attitude of High School Teachers Toword Smart Classrooms in Reletionaship to their Technoboia and Challenges faced by them during instruction through Modern technology. Manonmaniam Sudaranar University . 2015. Web 25 July 2018. http://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/200987
- Benard, Ronald and Dulle, Frankwell. " Assesment of Access and Use of School Library resources in Morogo Municipality, Tanzania." (2014) *Library Philosophy and Pratice*. 1107.
- Hussain, Amir and Mondel, Gourish Chandra. "History and Milston Higher education in India." *International Journal of Research and Analytical Reviews*.6.1 (2019). 998-983. Web 3 Feb. 2020.
- Kumar, Girija. Library Development in India. New Delhi: Vikas. 1986. Print.
- https://navodaya.gov.in/nvs/ro/Bhopal/en/About-Us/Establishment-of-JNVs/
- https://roraipur.kvs.gov.in/hi